जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

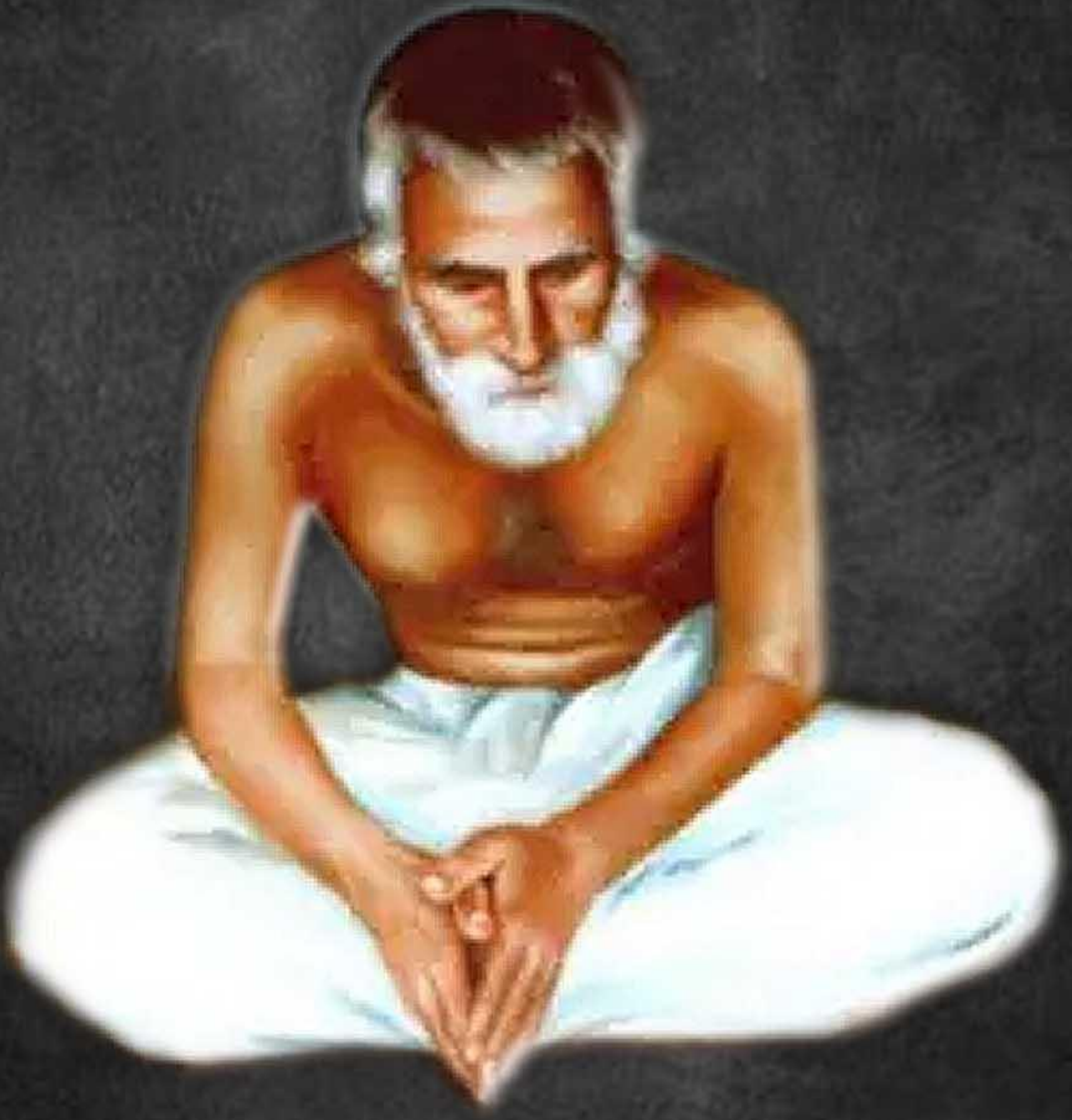

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

भाग – 46

बाहरी पवित्रता और विषय - वासना

श्रीलगुरुदेव

एक दिन नवद्वीप के एक प्रसिद्ध भागवत - व्यवसायी गोस्वामी नामधारी व्यक्ति लोम वस्त्र (पशु के बालों निर्मित) ओढ़कर श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज जी के पास आये। कथा प्रसंग में साधक की पवित्रता के सम्बन्ध में बात चल पड़ी। श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी

महाराज से प्रश्न करने के बाद वे कहने लगे,— “अन्याभिलाषी अथवा कनक – कामिनी - प्रतिष्ठा कामियों द्वारा पवित्रता पालन का ढोंग कोई पवित्रता - याजन नहीं है, वह उनके कोटि कोटि अपवित्रता के ढेर पर और एक अपवित्रता मात्र है। शरीर के एक अंग में यदि कुष्ठरोग (कोढ़) हो जाए तो सारे शरीर में ही कोढ़ फैल जाता है। लोम - वस्त्र पहनकर शौचालय जाना या गंगा स्नान करके पवित्र होने का विचार जिनका होता है; तो भी जो अन्दर से पूरी तरह से विषय-वासनाओं से भरे हुए हैं, वे

महाअपवित्र हैं — ये इतने अपवित्र होते हैं कि यह बात उन्हें बता देने पर भी वे समझ नहीं सकते। जो लोमवस्त्र या रेशमी कपड़े की पोषाक पहनते हैं, आतप चावल अन्न का भोजन करते हैं, गंगा स्नान आदि द्वारा बाहर से वैष्णवता दिखाकर अन्दर से भोग सामग्री इकट्ठा करना ही जिन्होंने जीवन का उद्देश्य बना रखा है; स्त्री, पुत्र, कनक कामिनी प्रतिष्ठा की सेवा ही जिनको अच्छी लगती है, जिनको वैष्णव सेवा में बिल्कुल भी रुचि नहीं हुई, वे लोग जिस किसी भी उपाय से पवित्र होने

की चेष्टा कर लें, वह पवित्रता श्रीकृष्ण को तनिक भी सुखकर नहीं हाती अर्थात् वैसी बाहरी पवित्रता का ढोंग करने वाले व्यक्ति के प्रति श्रीकृष्ण कभी भी प्रसन्न नहीं होते।

श्रीलगुरुदेव